
इकाई 3 नवपारंपरिक संश्लेषण*

इकाई की रूपरेखा

- 3.0 उद्देश्य
- 3.1 प्रस्तावना
- 3.2 संपदा क्षेत्र में साम्यावस्था
 - 3.2.1 IS वक्र का अवकलन
 - 3.2.2 IS वक्र में खिसकाव
- 3.3 मौद्रिक क्षेत्र में साम्यावस्था
 - 3.3.1 LM वक्र का अवकलन
 - 3.3.2 LM वक्र में खिसकाव
- 3.4 संपदा और मौद्रिक क्षेत्रों की युगपत साम्यावस्था
 - 3.4.1 IS–LM मॉडल में आघात
 - 3.4.2 अर्थव्यवस्था में समायोजन प्रक्रिया
 - 3.4.3 आपूर्ति आघातों का प्रभाव
- 3.5 AD–AS मॉडल
 - 3.5.1 AD वक्र का अवकलन
 - 3.5.2 कुल आपूर्ति वक्र
- 3.6 सारांश
- 3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

3.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि –

- किसी अर्थव्यवस्था में संपदा क्षेत्र और मौद्रिक क्षेत्र में साम्यावस्था की व्याख्या कर सकें;
- IS वक्र के पीछे अंतर्निहित अवधारणाओं की व्याख्या कर सकें;
- LM वक्र के पीछे अंतर्निहित अवधारणाओं की व्याख्या कर सकें;
- IS और LM वक्रों की परस्पर क्रिया को स्पष्ट कर सकें;
- उन कारकों की पहचान कर सकें जो IS और LM वक्रों की स्थिति और प्रवणता को प्रभावित करते हैं;
- IS–LM मॉडल से कुल माँग (AD) वक्र प्राप्त कर सकें; तथा
- AD वक्र को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगा सकें।

* प्रोफेसर कौस्तुभ बारिक, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।

3.1 प्रस्तावना

इकाई 2 में हमने चर्चा की कि केन्जियन मॉडल में उत्पादन का संतुलन स्तर कैसे निर्धारित किया जाता है। याद करें कि कीन्स ने अपना विश्लेषण महामंदी (ग्रेट डिप्रेशन) के बाद प्रस्तुत किया था। उन्होंने अर्थव्यवस्था को तत्काल ठीक करने के उद्देश्य से संसाधनों के कम उपयोग (यथा, निष्क्रिय क्षमता की विद्यमानता) वाली अर्थव्यवस्था पर विचार किया। इस प्रकार, उन्होंने अल्पावधि पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने तर्क दिया कि कुल व्यय (जो कुल माँग को निर्दिष्ट करता है) में वृद्धि से उत्पादन में वृद्धि होती है; इससे कीमतों में तब तक बढ़ोतरी नहीं होती जब तक कि पूर्ण नियोजन नहीं हो जाता।

उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए, सरल केन्जियन मॉडल में मूल्य स्तर को स्थिर रखा गया है। नियत कीमतों का एक निहितार्थ यह होता है कि अंकित मूल्य और वास्तविक मूल्य एक समान होते हैं।

इस इकाई में हम एक बंद अर्थव्यवस्था से ही सरोकार रखेंगे; कोई बाह्य व्यापार नहीं होगा। हम IS और LM वक्रों के अवकलन से आरंभ करते हैं। तदंतर हम IS-LM मॉडल के संतुलन बिंदुओं से AD वक्र ज्ञात करेंगे।

3.2 संपदा क्षेत्र में साम्यावस्था

किसी अर्थव्यवस्था का कुल व्यय (या, कुल माँग) निम्नलिखित समीकरण से दर्शाया जाता है –

$$Y = C + I + G$$

जहाँ Y उत्पादन (या, कुल आपूर्ति) है, C उपभोग व्यय है, I निवेश व्यय है, और G राजकीय व्यय है।

उपभोग फलन निम्नवत् दर्शाया जाता है –

$$C = a + b(Y - T) = a + bY_d \quad \dots (3.1)$$

जहाँ Y_d प्रयोज्य आय (यथा, $Y - T$) है। यहाँ T सरकार द्वारा लगाया गया एकमुश्त कर है। निवेश फलन निम्नवत् दर्शाया जाता है –

$$I = c + dY - e i \quad \dots (3.2)$$

जहाँ i ब्याज दर है (ब्याज की अंकित दर और वास्तविक ब्याज दर के बीच कोई अंतर नहीं है क्योंकि कीमत स्थिर रखी गई है)। चलिए, मान लेते हैं कि राजकीय व्यय (G) नियत है, और बाह्य रूप से दर्शाया गया है। तदनुसार,

$$Y = a + b(Y - \bar{T}) + (c + dY - e i) + \bar{G} \quad \dots (3.3)$$

समीकरण (3.3) में पदों को पुनः व्यवस्थित करने पर हमें निम्नलिखित समीकरण प्राप्त होता है –

$$Y - bY - dY = a - b\bar{T} + c - ei + \bar{G}$$

अथवा,

$$Y = \frac{a+c+\bar{G}-b\bar{T}}{(1-b-d)} - \frac{e}{(1-b-d)} i \quad \dots (3.4)$$

अब IS समीकरण, अपने सामान्य रूप में, निम्नवत् दर्शाया जाता है –

$$Y = \alpha_G(\bar{A} - ei) \quad \dots (3.4a)$$

जहाँ $\alpha_G = \frac{1}{(1-b-d)}$ और $\bar{A} = a + c + \bar{G} - b\bar{T}$ होंगे।

समीकरण (3.4) में हम Y और i के बीच एक विपरीत संबंध पाते हैं। इसका अर्थ यह है कि जैसे-जैसे i में वृद्धि होती है, Y में कमी आती है।

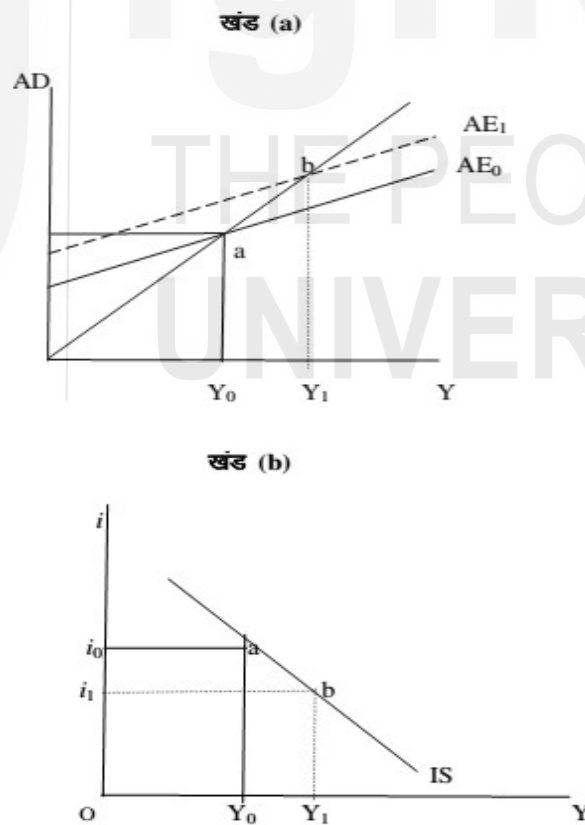
समीकरण (3.4) की प्रवणता ज्ञात करने के लिए हमें इसको i पदों में व्यक्त करना होगा और प्रवणता $\frac{di}{dY}$ अवकलित करनी होगी। हम IS वक्र की प्रवणता $-\frac{(1-b-d)}{e}$ के रूप में ज्ञात कर सकते हैं। प्राचलों के मान के आधार पर IS वक्र अपेक्षाकृत अधिक सपाट या प्रवण होगा।

3.2.1 IS वक्र का अवकलन

चित्र 3.1 में हम Y और i के बीच संबंध को एक आरेख के माध्यम से स्पष्ट करते हैं। चित्र के खंड (a) में हम y-अक्ष पर कुल व्यय (AE) और x-अक्ष पर उत्पादन (Y) दर्शाते हैं। चलिए, मान लेते हैं कि अर्थव्यवस्था AE_0 के साथ चल रही है, जबकि ब्याज दर i_0 है। बिंदु 'a' पर 45° रेखा के साथ AE_0 का प्रतिच्छेदन हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ध्यान दें कि चित्र 3.1(a) में 45° रेखा कुल माँग (AE) और कुल आपूर्ति (Y) के बीच समानता को इंगित करती है, जैसे कि यह अर्थव्यवस्था में साम्यावस्था के अनुरूप हो।

हम इस बिंदु 'a' को चित्र 3.1 के खंड (b) में आलेखित करते हैं। खंड (b) में हम y-अक्ष पर ब्याज दर (i) और x-अक्ष पर उत्पादन (Y) दर्शाते हैं।

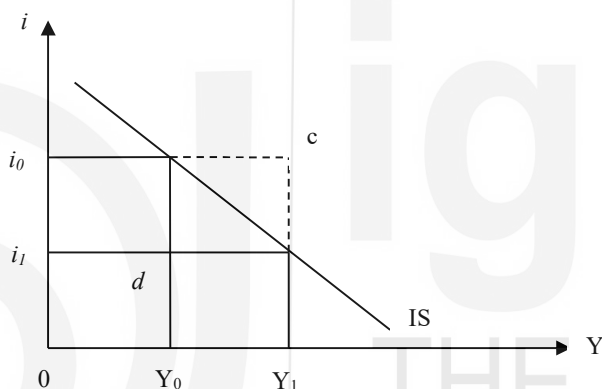


चित्र 3.1: IS वक्र का अवकलन

मान लीजिए कि i_0 से i_1 तक ब्याज दर में कमी हुई है। इसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में निवेश का स्तर बढ़ता है और नया कुल व्यय स्तर AE_1 तक पहुँच जाता है। कुल व्यय वक्र (AE_1) बिंदु—b पर 45° रेखा को काटता है।

कुल व्यय में वृद्धि के कारण उत्पादन के संतुलन स्तर में Y_0 से Y_1 तक वृद्धि होती है। हम उत्पादन स्तर Y_1 और ब्याज दर i_1 के अनुरूप चित्र 3.1 (b) में बिंदु—b आलेखित करते हैं। जब हम बिंदु 'a' और 'b' को जोड़ते हैं तो हमें एक अधोमुखी प्रवण वक्र प्राप्त होता है, जिसे IS वक्र कहा जाता है। इस IS वक्र पर एक बिंदु अर्थव्यवस्था के संपदा क्षेत्र (जिसे माल क्षेत्र भी कहा जाता है) में साम्यावस्था को दर्शाता है और यहाँ निवेश (I) एवं बचत (S) के बीच समानता है।

ध्यान देने की बात है कि अर्थव्यवस्था का संपदा क्षेत्र IS वक्र के प्रत्येक बिंदु पर संतुलन पर है। उपर्युक्त का एक निहितार्थ यह है कि IS वक्र के बाहर कोई भी बिंदु संपदा क्षेत्र में असंतुलन को दर्शाता है। चित्र 3.2 में हम दो ऐसे ही बिंदुओं 'c' और 'd' पर विचार करेंगे जो IS वक्र पर नहीं हैं, और उनके निहितार्थ का पता लगाएँगे।



चित्र 3.2: संपदा क्षेत्र में असंतुलन

चित्र 3.2 में बिंदु 'c' पर ब्याज दर i_0 है, जबकि उत्पादन Y_1 है। ध्यान दें कि उत्पादन के Y_1 स्तर पर संतुलनकारी ब्याज दर i_1 होनी चाहिए। इस प्रकार, वास्तविक ब्याज दर उस सीमा से अधिक है जहाँ उसे होना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप कुल माँग घट जाएगी (मुख्यतः निवेश में कमी के कारण) और ब्याज दर में गिरावट आएगी।

इसका अर्थ यह है कि बिंदु 'c' पर बाजार में माल की अतिरिक्त आपूर्ति है। यहाँ हम यह सामान्यीकरण कर सकते हैं कि कोई भी बिंदु जो IS वक्र के ऊपर और दाईं ओर होता है, माल की अतिरिक्त आपूर्ति को इंगित करता है।

आइए, अब बिंदु 'd' को देखें, जो IS वक्र के नीचे और बाईं ओर है। चित्र 3.2 में बिंदु 'd' पर, आय Y_0 पर है, परंतु ब्याज दर i_1 पर है। चूँकि ब्याज दर संतुलन ब्याज दर से कम है, निवेश की माँग बढ़ेगी। इसके परिणामस्वरूप ब्याज दर ऊपर की ओर बढ़ेगी।

इस प्रकार, बिंदु 'd' पर माल की अतिरिक्त माँग होगी। यहाँ हम यह सामान्यीकरण कर सकते हैं कि IS वक्र के नीचे और बाईं ओर किसी भी बिंदु पर माल की अतिरिक्त माँग होती है।

3.2.2 IS वक्र में खिसकाव

उक्त IS वक्र आय और ब्याज दर के बीच संबंध को दर्शाता है। अतः अन्य प्राचलों या चरों में किसी भी परिवर्तन के परिणामस्वरूप IS वक्र में खिसकाव अवश्य होगा। इस वक्र की स्थिति और प्रवणता समीकरण (3.4) में प्राचलों के मान पर निर्भर करती हैं।

यदि IS वक्र सपाट होगा तो अर्थव्यवस्था ब्याज दर के प्रति अधिक संवेदनशील होगी – ब्याज दर में थोड़ी-सी कमी से भी आय में बड़ी वृद्धि होगी। दूसरी ओर, एक अपेक्षाकृत अधिक प्रवण IS वक्र ब्याज दर परिवर्तन के प्रति असंवेदनशीलता को दर्शाता है।

समीकरण (3.4) में दो बहिर्जात चर, यथा G और T हैं। इस समीकरण (3.4) में हम यह मानकर चल रहे हैं कि राजकीय व्यय और कर नियत हैं। तदनुसार, करों और राजकीय व्यय में बदलाव के परिणामस्वरूप IS वक्र में भी बदलाव आएगा। चलिए, अब समीकरण (3.4) का विहंगावलोकन करते हैं।

चर \bar{G} के मान में वृद्धि के परिणामस्वरूप अवरोधन में वृद्धि होगी; तदनुसार, IS वक्र में ऊर्ध्वमुखी समानांतर खिसकाव देखा जाएगा। दूसरी ओर, \bar{T} में वृद्धि अवरोधन को कम कर देगी और IS वक्र में बाईं ओर अधोमुखी खिसकाव देखा जाएगा।

किसी प्राचल के मान में परिवर्तन से IS वक्र में खिसकाव आता ही है। स्वायत्त उपभोग में वृद्धि (समीकरण 3.4 में गुणांक 'a') या स्वायत्त निवेश (समीकरण 3.4 में गुणांक 'b') से IS वक्र में दाईं ओर एक ऊर्ध्वमुखी समानांतर खिसकाव देखा जाएगा। तथापि, सीमांत उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन IS वक्र की प्रवणता को प्रभावित करेगा।

बोध प्रश्न 1

- 1) यदि उपभोग की प्रवृत्ति में कमी हो तो IS वक्र में परिवर्तन की प्रकृति क्या होगी?

.....
.....
.....
.....
.....

- 2) किसी IS वक्र की स्थिति पर निम्नलिखित का क्या निहितार्थ होता है?

- (i) स्वायत्त राजकीय व्यय में कमी
(ii) कर की दर में कमी

.....
.....
.....
.....
.....

3.3 मौद्रिक क्षेत्र में साम्यावस्था

उक्त LM वक्र का अवकलन इस केन्जियन दृष्टिकोण का उपयोग करती है कि मुद्रा हेतु अपेक्षी माँग और लेन-देन माँग अलग-अलग होती हैं। मुद्रा हेतु अपेक्षी माँग ब्याज दर पर निर्भर करती है, जबकि मुद्रा हेतु लेन-देन माँग और मुद्रा हेतु निवारक माँग आय के स्तर पर निर्भर करती हैं। तदनुसार, मुद्रा की कुल माँग (M) आय (Y) और ब्याज दर (i) दोनों पर निर्भर करती है। वास्तविक रूप से मुद्रा की माँग ($\frac{M^d}{P}$) को निम्नवत् दर्शाया जाता है –

$$L = kY - hi \quad \dots (3.5)$$

जहाँ $k > 0, h > 0$; L वास्तविक शेष (चलनिधि) की माँग है, Y कुल आय है और i ब्याज दर है। हमें मौद्रिक क्षेत्र के विषय में तीन बातें याद रखनी चाहिए –

- (i) कोई भी व्यक्ति अपना पैसा बैंक में जमा करना और उस पर ब्याज कमाना चाहेगा। इसका विकल्प नकदी को सँभाल कर रखना रखना है, जहाँ कोई ब्याज आय अर्जित नहीं होती है। तदनुसार, पैसा सँभाल कर रखने की अवसर लागत छोड़े गए ब्याज के बराबर होती है। यदि ब्याज दर में वृद्धि होती है तो छोड़ा गया ब्याज भी बढ़ जाता है। इसके विपरीत, यदि ब्याज दर घटती है तो छोड़ी गई ब्याज आय कम हो जाती है। अतएव, यदि हम y-अक्ष पर ब्याज दर और x-अक्ष पर मुद्रा का परिमाण मापते हैं तो मुद्रा की माँग एक अधोमुखी प्रवण वक्र होती है। हम पहले ही चलनिधि जाल की अवधारणा से परिचित हैं; यथा ऐसी स्थिति जहाँ ब्याज दर बहुत कम होती है और लोग अपना सारा पैसा तरल नकदी के रूप में रखना पसंद करते हैं क्योंकि छोड़ी गई ब्याज आय नगण्य होती है।
- (ii) आय के किसी दिए गए स्तर के लिए वास्तविक शेष की माँग का वर्णन किया जाता है। चलिए, आय के स्तर को स्थिर [माना, $L(Y_0)$] रखते हुए मुद्रा माँग फलन पर विचार करते हैं। यदि आय के स्तर में वृद्धि होती है तो अर्थव्यवस्था में लेन-देन और मुद्रा के स्तर में वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा की माँग बढ़ जाती है। तदनुसार, मुद्रा माँग फलन में एक समानांतर खिसकाव देखा जाएगा।
- (iii) मुद्रा की आपूर्ति केंद्रीय बैंक द्वारा निर्धारित की जाती है और यह नियत रहती है। तदनुसार, मुद्रा की आपूर्ति एक ऊर्ध्वाधर ऋजु रेखा होती है। यदि केंद्रीय बैंक द्वारा मुद्रा की आपूर्ति बढ़ा दी जाती है तो यह ऊर्ध्वाधर ऋजु रेखा दाईं ओर खिसक जाएगी। जब हम अल्पावधि से ही सरोकार रखते हैं तो हम यह मानकर चलते हैं कि मुद्रा की आपूर्ति में बदलाव नहीं होता है।

3.3.1 LM वक्र का अवकलन

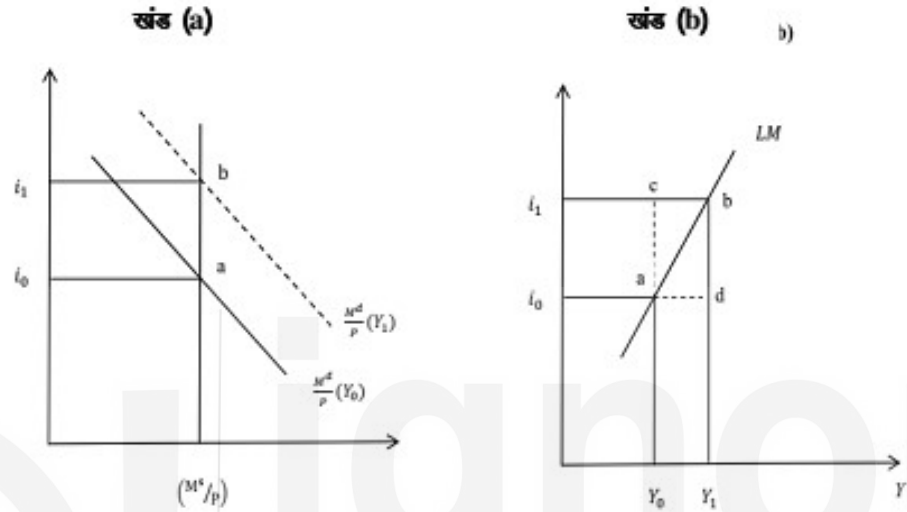
वास्तविक रूप से मुद्रा की आपूर्ति $\frac{M^s}{P}$ से दर्शायी जाती है। मुद्रा बाजार में साम्यावस्था तब ज्ञात होती है जब $L = M = \bar{M}$ हो। तदनुसार, मुद्रा बाजार में साम्यावस्था निम्नवत् दर्शायी जाती है –

$$\frac{\bar{M}}{P} = kY - hi \quad \dots (3.6)$$

उपर्युक्त समीकरण में पदों को हम पुनः व्यवस्थित कर निम्नलिखित समीकरण प्राप्त कर सकते हैं –

$$Y = -\frac{1}{h} \frac{\bar{M}}{P} + \frac{h}{k} i \quad \dots (3.6a)$$

उक्त LM वक्र में Y और i के बीच एक सकारात्मक संबंध है। समीकरण (3.6) की प्रवणता ज्ञात करने के लिए हमें समीकरण को i पदों में व्यक्त करना होगा और प्रवणता $\frac{di}{dY}$ ज्ञात करनी होगी। हम LM वक्र की प्रवणता $\frac{k}{h}$ के रूप में ज्ञात कर सकते हैं। प्राचलों के मान के आधार पर LM वक्र अपेक्षाकृत अधिक सपाट या अति प्रवण होगा।



चित्र 3.3: LM वक्र का अवकलन

चित्र 3.3 के खंड (a) में हम मुद्रा बाजार (या, मौद्रिक क्षेत्र) की साम्यावस्था को दर्शाते हैं। हम x-अक्ष पर वास्तविक शेष $\left(\frac{M}{P}\right)$ और y-अक्ष पर ब्याज दर की माँग को दर्शाते हैं। मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था में मुद्रा की माँग $\frac{M^d}{P}(Y_0)$ के रूप में तब दर्शायी जाती है जब कुल आय Y_0 होती है। चित्र 3.3 के खंड (a) में इस साम्यावस्था को बिंदु खंड 'a' से निर्दिष्ट किया गया है। साम्यावस्था ब्याज दर और आय क्रमशः i_0 और Y_0 हैं।

माना आय के स्तर में Y_0 से Y_1 तक वृद्धि हो सकती है। आय में इस प्रकार की वृद्धि से मुद्रा माँग फलन में समानांतर रूप से ऊपर की ओर खिसकाव आएगा। हम चित्र 3.3 के खंड (a) में इस मुद्रा माँग फलन को एक बिंदुकित रेखा $\frac{M^d}{P}(Y_1)$ के रूप में दर्शाते हैं।

मुद्रा आपूर्ति स्थिर रहने पर कुल मुद्रा में वृद्धि से ब्याज दर में वृद्धि होगी। अर्थव्यवस्था अब उत्पादन स्तर Y_1 और ब्याज दर i_1 के साथ साम्यावस्था में है। मुद्रा आपूर्ति फलन और मुद्रा माँग फलन के बीच प्रतिच्छेदन को चित्र 3.3 के ही खंड (a) में बिंदु 'b' से दर्शाया गया है।

चित्र 3.3 के खंड (b) में हम ब्याज दर और कुल आय का संयोजन लेकर LM वक्र बनाते हैं, जहाँ मुद्रा बाजार साम्यावस्था में है। चित्र 3.3 के ही खंड (a) में हमारे पास ऐसे दो बिंदु 'a' और 'b' हैं।

यह ध्यान देने की बात है कि LM वक्र उन सभी बिंदुओं का संयोजन है जहाँ मुद्रा बाजार साम्यावस्था में है। जैसा कि आप चित्र में देख सकते हैं, LM वक्र ऊर्ध्वमुखी प्रवण है।

इस वक्र का निहितार्थ यह है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है लोग अधिक पैसा रखना चाहते हैं, जिससे ब्याज दर बढ़ जाती है।

यदि मुद्रा की अपेक्षी माँग ब्याज दर (चलनिधि जाल स्थिति) के लिए पूरी तरह से लोचदार हो तो LM वक्र क्षैतिज होगा। दूसरी ओर, यदि अपेक्षी माँग ब्याज दर के प्रति पूर्णतः लोचहीन हो तो LM वक्र ऊर्ध्वाधर होगा।

उक्त LM वक्र के बाईं ओर मुद्रा की अतिरिक्त आपूर्ति है [उदाहरण के लिए, चित्र 3.3 के खंड (b) में बिंदु 'ब']। मुद्रा बाजार में अतिरिक्त आपूर्ति का अर्थ है कि मुद्रा की माँग इसकी आपूर्ति से कम है। इसका अर्थ है कि लोग अपने पास मौजूद चलनिधि की मात्रा कम करना चाहते हैं।

यह लोगों को बांड खरीदने के लिए प्रेरित करता है जिससे बांड की कीमतें बढ़ती हैं और ब्याज दर में गिरावट आती है। ब्याज दर में गिरावट से अर्थव्यवस्था में साम्यावस्था बहाल हो जाती है।

इस वक्र के दाईं ओर मुद्रा की अतिरिक्त माँग है [उदाहरण के लिए, चित्र 3.3 के खंड (b) में बिंदु 'd']। मुद्रा की अत्यधिक माँग के कारण लोग बांड बेच देते हैं (ताकि वे अधिक मात्रा में चलनिधि रख सकें)। इससे बांड की कीमतों में गिरावट आती है और ब्याज दर में वृद्धि होती है। इस प्रकार मौद्रिक क्षेत्र में साम्यावस्था बहाल हो जाती है।

3.3.2 LM वक्र में खिसकाव

उक्त LM वक्र की स्थिति और प्रवणता मुद्रा आपूर्ति सहित कुछ कारकों पर निर्भर करती है।

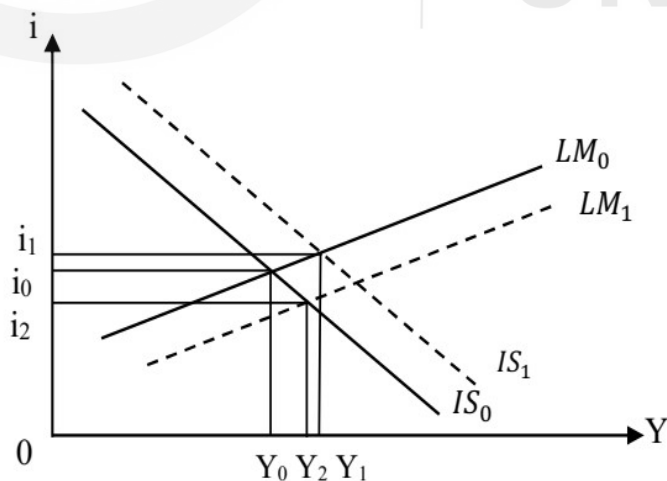
मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि LM वक्र को दाईं ओर खिसका देती है। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर संतुलनकारी ब्याज दर पहले की तुलना में कम हो जाती है।

इस प्रकार, मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि LM वक्र को दाईं ओर खिसका देती है।

इसके विपरीत, मुद्रा आपूर्ति में कमी LM वक्र को बाईं ओर खिसका देगी ताकि उत्पादन के हर स्तर पर संतुलनकारी ब्याज दर अधिक हो।

3.4 संपदा और मौद्रिक क्षेत्रों की युगपत साम्यावस्था

आइए, अब हम IS और LM वक्रों को संयोजित करते हैं, जैसा कि चित्र 3.4 में दर्शाया गया है। इन IS-LM वक्रों का ऐसा एकीकरण i और Y का एक अनुठा संयोजन देता है, जो कि संपदा बाजार और मुद्रा बाजार दोनों में साम्यावस्था को निर्दिष्ट करता है।



चित्र 3.4: युगपत साम्यावस्था

चित्र 3.4 में IS_0 और LM_0 को हम एक ही आरेख में अध्यारोपित कर देते हैं। हम आय (Y) को x-अक्ष पर और ब्याज दर (i) को y-अक्ष पर मापते हैं। संतुलनकारी ब्याज दर और संतुलनकारी उत्पादन स्तर क्रमशः i_0 और Y_0 से दर्शाए जाते हैं।

3.4.1 IS-LM मॉडल में आघात

इससे पहले हमने उन कारकों के विषय में चर्चा की है जो IS वक्र और LM वक्र में खिसकाव का कारण बनते हैं। प्रायः अर्थव्यवस्था बाहरी माँग आघात और आपूर्ति आघात का अनुभव करती है। आइए, IS-LM मॉडल के संदर्भ में ऐसे आघातों के प्रभाव का विश्लेषण करें।

मान लीजिए कि शेयर बाजार में तेजी आती है, जिससे परिवारों की धन-संपदा में परिवर्तन आ जाता है। ऐसी स्थिति से अर्थव्यवस्था में उपभोग का स्तर बढ़ेगा। इसके फलस्वरूप कुल व्यय में वृद्धि होगी और IS वक्र दाहिनी ओर IS_0 से IS_1 तक खिसक जाएगा (देखें चित्र 3.4)।

परिणामतः उत्पादन में Y_0 से Y_1 तक वृद्धि हो जाती है। फर्मों के व्यावसायिक आत्मविश्वास में कमी जैसे नकारात्मक आघात IS वक्र को बाईं ओर खिसका देंगे। उक्त IS वक्र में इस प्रकार बाईं ओर खिसकाव से उत्पादन के साथ-साथ ब्याज दर में भी कमी आएगी।

चलिए, एक और उदाहरण पर विचार करते हैं। मान लीजिए कि देश में ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी के मामलों की एक शृंखला चल रही है। इससे लोगों में नकारात्मक संकेत जाएगा – इससे लोग अपनी आय को औपचारिक प्रणाली में रखने के लिए हतोत्साहित होंगे ऑनलाइन लेन-देन में गिरावट आएगी और मुद्रा की माँग बढ़ेगी।

इसके फलस्वरूप LM वक्र दाहिनी ओर LM_0 से LM_1 तक खिसक जाएगा (देखें चित्र 3.4)। परिणामतः उत्पादन में Y_0 से Y_2 तक वृद्धि होगी और ब्याज दर में i_0 से i_2 तक कमी होगी। ध्यान देने की बात है कि उत्पादन और ब्याज दर में परिवर्तन की प्रकृति एवं सीमा IS और LM वक्रों की प्रवणता पर निर्भर करेंगी। यदि LM वक्र अपेक्षाकृत अधिक समतल होगा तो मौद्रिक नीति काफी प्रभावी होगी।

केंद्रीय बैंक द्वारा ब्याज दर में थोड़ी-सी कमी से भी उत्पादन में बड़ी मात्रा में वृद्धि होगी। यदि LM वक्र अपेक्षाकृत अधिक प्रवण होगा तो मौद्रिक नीति प्रभावी नहीं होगी। उत्पादन में थोड़ी-सी भी वृद्धि करने के लिए हमें ब्याज दर में बड़ी कमी की आवश्यकता होगी।

3.4.2 अर्थव्यवस्था में समायोजन प्रक्रिया

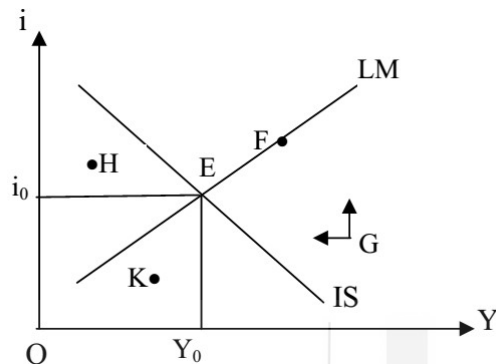
इस बिंदु पर एक प्रश्न उठता है – यदि अर्थव्यवस्था एक ऐसे बिंदु पर काम कर रही हो जो IS और LM वक्रों के प्रतिच्छेदन पर न हो तो उसका क्या होगा? क्या वह स्वतः साम्यावस्था बिंदु पर अभिसरित हो जाएगी? आइए, इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करें।

यदि अर्थव्यवस्था उस अनूठे बिंदु पर काम न कर रही हो जहाँ IS और LM वक्र प्रतिच्छेद करते हैं, तो अर्थव्यवस्था में असंतुलन होगा। उस स्थिति में समायोजन प्रक्रिया शुरू होती है और अर्थव्यवस्था एक साम्यावस्था बिंदु पर पहुँच जाती है। इस संदर्भ में निम्नलिखित दो मुद्दे महत्वपूर्ण होते हैं –

- यदि मुद्रा की अतिरिक्त माँग हो (LM वक्र के दाईं ओर) तो ब्याज दर बढ़ जाएगी। यदि मुद्रा बाजार में अतिरिक्त आपूर्ति दिखाई देती हो तो ब्याज दर गिर जाएगी। ब्याज दर में गिरावट से निवेश बढ़ेगा। निवेश बढ़ने से IS वक्र पर असर पड़ेगा।

b) माल की अत्यधिक माँग (IS वक्र के बाईं ओर) से उत्पादन में वृद्धि होती है। उत्पादन में वृद्धि से मुद्रा की माँग में वृद्धि होगी। मुद्रा की माँग बढ़ने से ब्याज दर में वृद्धि होगी और LM वक्र में बहिर्मुखी खिसकाव होगा।

उपर्युक्त से हम पाते हैं कि संपदा क्षेत्र और मौद्रिक क्षेत्र दोनों परस्पर संबंधित हैं। अर्थव्यवस्था को वास्तविक आघात लगने से मौद्रिक क्षेत्र पर प्रभाव पड़ेगा और इसका विपरीत भी सत्य है।



चित्र 3.5: साम्यावस्था बिंदु पर अभिसरण

चित्र 3.5 में हम IS और LM वक्र आलेखित करते हैं। अर्थव्यवस्था बिंदु E पर साम्यावस्था में है, जहाँ i_0 और Y_0 क्रमशः संतुलनकारी ब्याज दर और उत्पादन के रूप में हैं। मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था को पहुँचे किसी आघात के कारण संतुलन गड़बड़ा गया है। हमने बिंदु F, G, H और K निर्दिष्ट किए हैं, जहाँ अर्थव्यवस्था साम्यावस्था में नहीं है।

चलिए, बिंदु G पर विचार करते हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, बिंदु G पर मुद्रा की अतिरिक्त माँग और माल की अतिरिक्त आपूर्ति है। बिंदु G पर दिए गए तीर उस दिशा को निर्दिष्ट करते हैं जिसमें समायोजन होता है। मुद्रा की अधिक माँग के कारण ब्याज दर में वृद्धि होगी।

ऐसा इसलिए है कि लोग अधिक चलनिधि रखने के लिए बांड बेचेंगे, जिसके परिणामस्वरूप बांड की कीमतें घटेंगी और ब्याज दर बढ़ जाएगी। चित्र 3.5 में ऊपर की ओर संकेत करता तीर बढ़ती ब्याज दर को दर्शाता है। बिंदु G पर माल की भी अधिक आपूर्ति है।

इससे माल का अनैच्छिक संचय होगा; मालसूची में वृद्धि होगी। इसके परिणामस्वरूप फर्म उत्पादन में कटौती करेंगी और उत्पादन के स्तर में गिरावट आएगी। बाईं ओर संकेत करने वाला तीर घटते उत्पादन को दर्शाता है। अंततः अर्थव्यवस्था संतुलन बिंदु E की ओर बढ़ेगी।

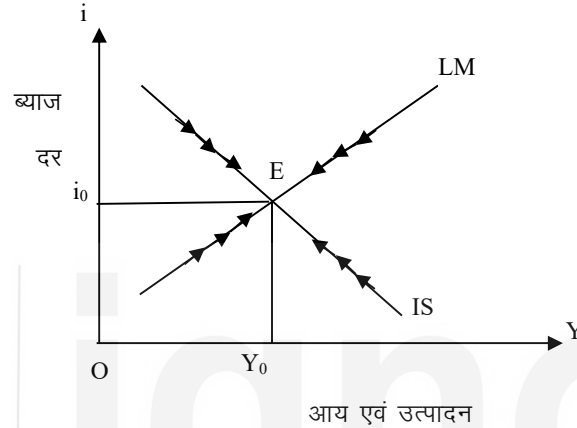
चित्र 3.5 में बिंदु F, H और K भी असंतुलन बिंदु हैं। हम इन बिंदुओं पर आपूर्ति और माँग की स्थिति का विश्लेषण कर सकते हैं और उन दिशाओं का पता लगा सकते हैं जिनमें समायोजन होगा।

उदाहरण के लिए, बिंदु 'H' पर मुद्रा की अतिरिक्त आपूर्ति है (क्योंकि यह LM वक्र के बाईं ओर है) और माल की अतिरिक्त माँग है (क्योंकि यह IS वक्र के बाईं ओर है)।

मुद्रा की अधिक आपूर्ति से ब्याज दर में कमी आएगी। माल की अत्यधिक माँग से उत्पादन स्तर में वृद्धि होगी। परिणामतः अर्थव्यवस्था संतुलन बिंदु E की ओर बढ़ेगी।

मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था बिंदु F पर है (देखें चित्र 3.5) – यहाँ मौद्रिक क्षेत्र संतुलन में है, परंतु संपदा क्षेत्र असंतुलन में है। इस अर्थव्यवस्था में माल की अधिक आपूर्ति होती है। इससे माल संचय में वृद्धि होगी। इसके फलस्वरूप फर्म अपना उत्पादन स्तर कम कर देंगी।

उत्पादन में कमी से मुद्रा की माँग में कमी आएगी और परिणामतः ब्याज दर में कमी आएगी। अंततः अर्थव्यवस्था संतुलन बिंदु E पर पहुँच जाएगी जहाँ IS और LM दोनों वक्र प्रतिच्छेद करते हैं।



चित्र 3.6: अर्थव्यवस्था में समायोजन प्रक्रिया

ध्यान देने की बात है कि जब दो बाजारों में से एक में असंतुलन देखा जा रहा हो तो समायोजन प्रक्रिया के बाद अर्थव्यवस्था वापस साम्यावस्था में पहुँच जाती है। चित्र 3.6 में हमने परिवर्तन की दिशा को तीर के निशान से दर्शाया है।

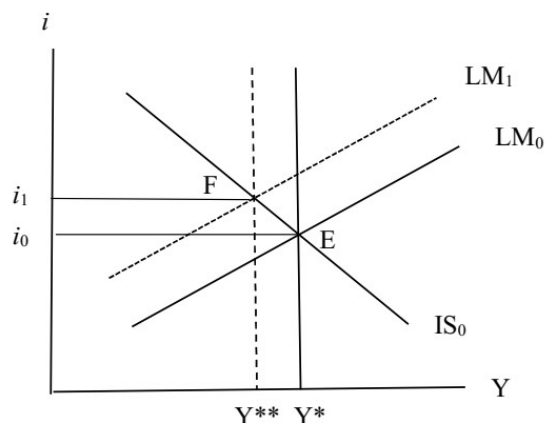
3.4.3 आपूर्ति आघातों का प्रभाव

उक्त IS-LM मॉडल में यह आवश्यक नहीं है कि साम्यावस्था अर्थव्यवस्था के संभावित उत्पादन (या, पूर्ण-नियोजन उत्पादन) के स्तर पर ही हो। साम्यावस्था अर्थव्यवस्था में उत्पादन के किसी भी स्तर पर हो सकती है। नीति-निर्माताओं का हमेशा से एक उद्देश्य रहा है कि अर्थव्यवस्था संभावित उत्पादन स्तर पर चलनी चाहिए और बेरोजगारी अपने प्राकृतिक स्तर पर होनी चाहिए।

क्या अंततोगत्वा अर्थव्यवस्था पूर्ण-नियोजन उत्पादन स्तर पर साम्यावस्था बनाए रख पाती है?

दीर्घावधि में कीमतें स्थिर नहीं रहतीं। यदि वास्तविक उत्पादन संभावित उत्पादन से अधिक होगा तो मूल्य वृद्धि होगी ही। अर्थव्यवस्था का कुल व्यय (जैसे उपभोग, निवेश और राजकीय व्यय) वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग का वर्णन करता है, जो कि वस्तुओं एवं सेवाओं के भौतिक परिमाण को इंगित करता है। मूल्य स्तर में परिवर्तन से इन परिमाणों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

तदनुसार, IS वक्र अपेक्षाकृत स्थिर है – यह खिसक नहीं सकता है। दूसरी ओर, LM वक्र वास्तविक शेष की आपूर्ति और माँग पर आधारित होता है। तदनुसार, मूल्य स्तर में परिवर्तन LM वक्र को खिसका ही देगा। पूर्ण-नियोजन उत्पादन अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता से दर्शाया जाता है। यह उत्पादन फलन से अवकलित किया जाता है (देखें इकाई 1)।



चित्र 3.7: प्रतिकूल आपूर्ति आघातों का समायोजन

मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था का पूर्ण-नियोजन उत्पादन (संभावित उत्पादन) Y^* से दर्शाया जाता है। हमने इसे चित्र 3.7 में एक ऊर्ध्वाधर ऋजु रेखा से दर्शाया है। यहाँ IS_0 वक्र और LM_0 वक्र बिंदु E पर प्रतिच्छेद करते हैं, जो कि पूर्ण-नियोजन उत्पादन के अनुरूप है।

मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था को प्रतिकूल आपूर्ति आघात पहुँचता है (उदाहरण के लिए, अनावृष्टि के कारण कृषि उत्पादकता में गिरावट), जिसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था के संभावित उत्पादन में Y^* से Y^{**} तक कमी आ जाती है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, ऐसी स्थितियों में IS वक्र अपेक्षाकृत स्थिर होता है और अर्थव्यवस्था LM वक्र में खिसकाव के माध्यम से समायोजित होती है। प्रतिकूल आपूर्ति आघात के कारण कीमतों में वृद्धि होती है और परिणामतः LM वक्र में बाईं ओर खिसकाव देखा जाता है। इस प्रकार, ब्याज दर में वृद्धि होती है और नयी साम्यावस्था बिंदु F पर देखी जाती है।

बोध प्रश्न 2

1) किसी अर्थव्यवस्था में LM वक्र कैसे अवकलित किया जाता है? स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

2) मान लीजिए कि LM वक्र ऊर्ध्वाधर है। इसके निहितार्थ क्या होते हैं?

.....

.....

.....

.....

3) IS–LM मॉडल में आपूर्ति आघातों का समायोजन कैसे होता है? स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

3.5 AD–AS मॉडल

उक्त IS–LM मॉडल में हम यह मानकर चले थे कि मूल्य स्तर स्थिर होता है। चलिए, अब हम उस अवधारणा को विराम देते हैं और अर्थव्यवस्था में संतुलन उत्पादन पर कीमतों के प्रभाव पर विचार करते हैं। सबसे पहले हम कुल माँग (AD) वक्र ज्ञात करते हैं। इसके बाद हम AD वक्र को कुल आपूर्ति (AS) वक्र के साथ जोड़ देते हैं और उत्पादन के संतुलन स्तर का पता लगाते हैं।

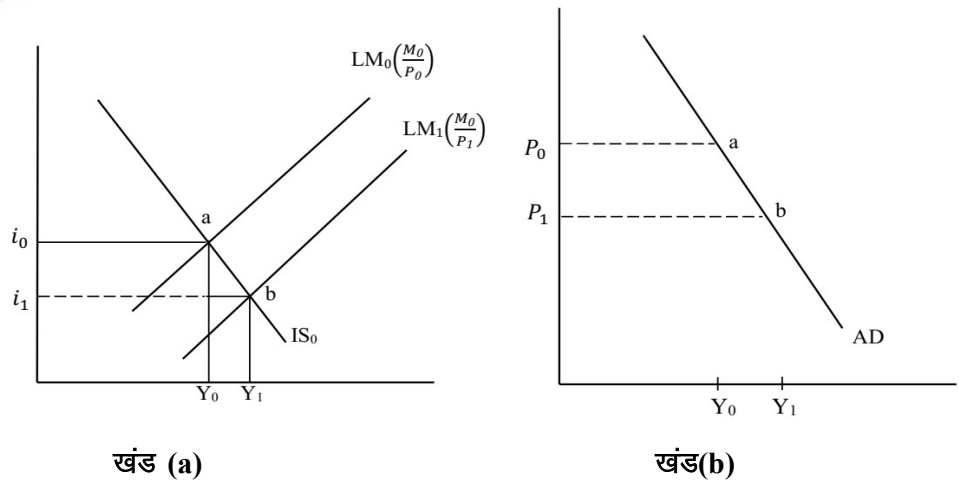
3.5.1 AD वक्र का अवकलन

मूल्य स्तर में परिवर्तन से अर्थव्यवस्था में वास्तविक मुद्रा आपूर्ति ($\frac{M^s}{P}$) में परिवर्तन होता है। यदि मुद्रा आपूर्ति (M) को स्थिर मान लिया जाए तो इसके परिणामस्वरूप LM वक्र में खिसकाव देखा जाएगा। तदनुसार, संतुलनकारी ब्याज दर और उत्पादन में परिवर्तन होगा।

यदि हम यह मानकर चलते हैं कि मूल्य स्तर समय के साथ बदलता रहता है तो हमें विभिन्न मूल्य स्तरों के अनुरूप उत्पादन के संतुलन स्तरों की एक शृंखला प्राप्त होगी। यदि हम कीमतों और उत्पादन के ऐसे संयोजनों को आलेखित करते हैं तो हमें कुल माँग (AD) वक्र प्राप्त होता है।

उक्त IS–LM वक्रों से AD वक्र का अवकलन चित्र 3.8 में दर्शाया गया है। इस चित्र के खंड (a) में हम संतुलनकारी आय स्तर Y_0 और ब्याज दर i_0 के साथ बिंदु E पर प्रतिच्छेद करने वाले वक्रों IS_0 और LM_0 को पास–पास रखते हैं।

यहाँ LM_0 वक्र M_0/P_0 के वास्तविक मुद्रा भंडार पर आधारित है। इस प्रकार, हम चित्र 3.8 के खंड (b) में AD वक्र पर बिंदु 'a' के रूप में P_0 और Y_0 के संयोजन का वर्णन करते हैं।



चित्र 3.8: AD वक्र का अवकलन

अब, मान लीजिए कि मूल्य स्तर में P_1 तक गिरावट आ जाती है। यदि मुद्रा भंडार में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो वास्तविक शेष की आपूर्ति M_0/P_1 तक बढ़ जाएगी। ध्यान देने की बात है कि वास्तविक शेष में वृद्धि कीमतों में कमी के कारण होती है, न कि अवास्तविक मुद्रा भंडार में वृद्धि के कारण।

उक्त LM वक्र दाहिनी ओर खिसक जाता है। चित्र 3.8 के खंड (a) में हमने नए LM वक्र को LM_1 के रूप में दर्शाया है। पद IS_0 और LM_1 के साथ नया संतुलन बिंदु 'b' है; ब्याज दर गिरकर i_1 पर आ जाती है और आय बढ़कर Y_1 पर पहुँच जाती है। पद P_1 और Y_1 का संयोजन चित्र 3.7 के खंड (b) में बिंदु 'b' बन जाता है। चर 'a' और 'b' के रूप में अंकित ऐसे सभी बिंदुओं को जोड़ने पर हमें AD वक्र प्राप्त होता है।

उक्त AD वक्र अधोमुखी प्रवण है, जो कि कीमतों और उत्पादन के बीच विपरीत संबंध को इंगित करता है। मूल्य स्तर में गिरावट से वास्तविक धन आपूर्ति बढ़ जाती है, जिससे मुद्रा बाजार में असंतुलन पैदा होता है। वास्तविक शेष की आपूर्ति में वृद्धि से ब्याज दर में कमी आती है। ब्याज दर में कमी से मुद्रा बाजार में साम्यावस्था बहाल होती है। ब्याज दर में कमी से निवेश के स्तर में भी वृद्धि होती है। निवेश के स्तर में वृद्धि से कुल व्यय में वृद्धि होती है, जिससे उत्पादन का स्तर बढ़ता है।

यदि कीमत में ज्ञात परिवर्तन से उत्पादन में बड़ा परिवर्तन होता है तो AD वक्र अपेक्षाकृत अधिक सपाट होता है। दूसरी ओर, यदि कीमत में ज्ञात परिवर्तन से उत्पादन में कम वृद्धि होती है तो AD वक्र अति प्रवण होता है। विस्तारवादी राजकोषीय नीति (जैसे राजकीय व्यय में वृद्धि, कर की दर में कमी) के परिणामस्वरूप AD वक्र ऊपर की ओर दाईं ओर खिसक जाता है।

दूसरी ओर, कोई भी संकुचनकारी राजकोषीय नीति AD वक्र को बाईं ओर नीचे की ओर खिसका देती है। इसी प्रकार, कोई भी विस्तारवादी मौद्रिक नीति (उदाहरण के लिए, ब्याज दर में कमी, मुक्त बाजार संचालन के माध्यम से मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि, आरक्षित निधि की अपेक्षाएँ, आदि) AD वक्र को दाईं ओर खिसका देगी, जबकि कोई भी संकुचनकारी मौद्रिक नीति AD वक्र को बाईं ओर खिसका देगी।

ध्यान देने की बात है कि कोई भी कारक जो IS वक्र या LM वक्र में दाईं ओर खिसकाव की ओर अग्रसर करता है, वह AD वक्र को दाईं ओर खिसका देता है। इसी प्रकार, कोई भी कारक जो IS वक्र या LM वक्र को बाईं ओर खिसका देता है, वह AD वक्र को बाईं ओर खिसका देता है। इस प्रकार, स्वायत्त व्यय के किसी भी घटक में वृद्धि, जैसे कि राजकीय व्यय में वृद्धि, से AD वक्र दाईं ओर खिसक जाता है। साथ ही, अवास्तविक मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि AD वक्र को ऊपर की ओर खिसका देगी।

3.5.2 कुल आपूर्ति (AS) वक्र

व्यष्टि अर्थशास्त्र से हम जानते हैं कि AS वक्र ऊर्ध्वमुखी प्रवण होता है – जब किसी उत्पाद की कीमत बढ़ती है तो फर्म अधिक उत्पाद का उत्पादन करती हैं। समग्र अर्थव्यवस्था के मामले में उत्पादन क्षमता सीमित होती है, जबकि अर्थव्यवस्था के लिए उपलब्ध संसाधन असीमित नहीं होते हैं।

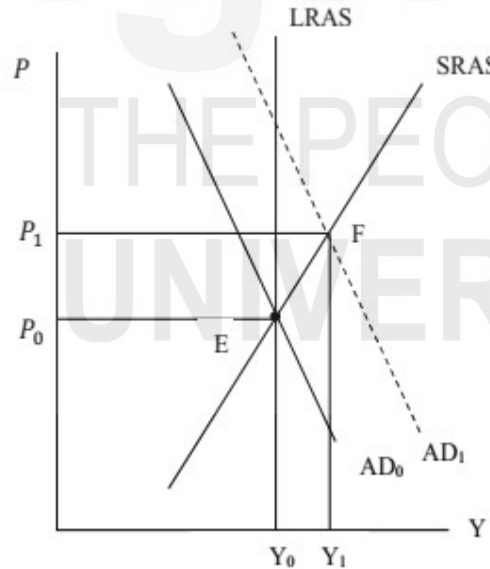
उक्त AS वक्र का व्यवहार अल्पावधि की तुलना में दीर्घावधि में भिन्न होता है। अल्पावधि, जैसा कि आप जानते हैं, एक ऐसी समयावधि होती है जिसमें वेतन व कुछ अन्य आर्थिक चर आर्थिक परिवेश में परिवर्तनों पर प्रतिक्रिया नहीं करते हैं, जबकि दीर्घावधि एक ऐसी समयावधि होती है जिसमें वेतन और कीमतें लचीले होते हैं।

इकाई 1 में चर्चा का विषय रहा क्लासिकल सिद्धांत यह मानकर चलता है कि AS वक्र पूर्ण नियोजन स्तर पर ऊर्ध्वाधर होता है। तदनुसार, उत्पादन कीमतों में परिवर्तनों के प्रति पूरी तरह से लोचहीन होता है। कीन्स दूसरी चरम स्थिति तक गए और यह मानकर चले कि AS वक्र क्षैतिज होता है।

क्षैतिज AS वक्र का एक निहितार्थ यह होता है कि फर्म कीमतों को प्रभावित किए बिना किसी भी स्तर तक उत्पादन बढ़ा सकती हैं। वस्तुतः AS वक्र के ये दोनों ही संस्करण (ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज) अवास्तविक लगते हैं। जैसा कि हम आगे की इकाइयों में पढ़ेंगे, नवपारंपरिक अर्थशास्त्रियों का कहना है कि AS वक्र अल्पावधि में ऊर्ध्वमुखी प्रवण होता है।

लुकास ने अपनी 'कुल आपूर्ति परिकल्पना' में इस बात का समर्थन किया है कि आर्थिक अभिकर्ता मूल्य एवं वेतन प्रोत्साहन पर प्रतिक्रिया दिखाते हैं, जो कि अवकाश एवं कार्य के बीच संतुलन प्रयास को प्रभावित करते हैं। इसके परिणामस्वरूप जब वास्तविक वेतन संतुलनकारी वेतन दर से अधिक होता है तो परिवार अधिक श्रम की आपूर्ति करते हैं।

इसके विपरीत, जब वास्तविक वेतन दर संतुलनकारी वेतन दर से कम होती है तो परिवार श्रम की आपूर्ति कम कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप अल्पावधि कुल आपूर्ति (LRAS) वक्र ऊर्ध्वमुखी प्रवण होगा। तथापि, दीर्घावधि कुल आपूर्ति वक्र (LRAS) ऊर्ध्वाधर होगा। अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता में कोई भी परिवर्तन LRAS वक्र को खिसका देता है।



चित्र 3.9: माँग आघात और ऊर्ध्वमुखीप्रवण आपूर्ति वक्र

चित्र 3.9 में हमने AD वक्र और एक ऊर्ध्वमुखी प्रवण AS वक्र दर्शाया है। अर्थव्यवस्था में साम्यावस्था को उत्पादन Y_0 और कीमतों P_0 के अनुरूप बिंदु E से दर्शाया गया है। मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था को एक अनुकूल माँग का आघात लगता है, जिससे AD वक्र खिसककर AD_1 पर आ जाता है।

इसके परिणामस्वरूप उत्पादन और कीमतें दोनों में वृद्धि होती है। बिंदु F से इंगित नयी साम्यावस्था उत्पादन Y_1 और कीमतों P_1 के अनुरूप होती है।

- 1) AD वक्र कैसे ज्ञात होता है? स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

- 2) उन कारकों का उल्लेख करें जो AD वक्र की स्थिति एवं प्रवणता को प्रभावित करते हैं।

.....

.....

.....

.....

3.6 सारांश

इस इकाई में हमने IS–LM मॉडल का वर्णन किया है, जो कि अर्थव्यवस्था के संपदा क्षेत्र और मौद्रिक क्षेत्र में साम्यावस्था को दर्शाता है। हमने IS वक्र ज्ञात किया –IS वक्र के प्रत्येक बिंदु पर संपदा क्षेत्र साम्यावस्था में होता है। उक्त IS वक्र के बाईं ओर वस्तुओं की अतिरिक्त माँग होती है, जबकि दाईं ओर आपूर्ति की अधिकता होती है। दूसरी ओर, LM वक्र ऐसे सभी बिंदुओं का संयोजन होता है जहाँ अर्थव्यवस्था का मौद्रिक क्षेत्र साम्यावस्था में होता है।

इस LM वक्र के दाईं ओर मुद्रा की अतिरिक्त माँग होती है, जबकि इसके बाईं ओर मुद्रा की अतिरिक्त आपूर्ति होती है। यदि अर्थव्यवस्था IS और LM वक्रों से दूर किसी बिंदु पर चल रही हो तो उसमें संतुलन बिंदु की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति होती है।

हमने IS–LM मॉडल के आधार पर AD वक्र भी ज्ञात किया। यह AD वक्र संतुलनकारी उत्पादन और कीमतों के संयोजन का पता लगाता है। अर्थव्यवस्था में इस AS–AD मॉडल से अवकलित संतुलनकारी उत्पादन और कीमतों पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

- 1) यह IS वक्र के अवरोधन और प्रवणता दोनों को प्रभावित करेगा। समीकरण (3.4) पर विचार करें। उपभोग करने की सीमांत प्रवृत्ति में कमी (गुणांक 'b') से अवरोधन पद के मान में कमी आएगी। अब समीकरण के अंतिम पद पर विचार करें। इससे $\frac{e}{(1-b-d)}$ के मान में वृद्धि होगी। इस प्रकार, IS वक्र अति प्रवण होगा।
- 2) (i) स्वायत्त राजकीय व्यय में कमी से IS वक्र में बाईं ओर एक समानांतर अधोमुखी खिसकाव देखा जाएगा।
(ii) एकमुश्त कर में कमी से IS वक्र में एक समानांतर ऊर्ध्वमुखी खिसकाव आएगा। किंतु प्रश्न कर दर में कमी का है, जो कि आय (Y) पर निर्भर करती है। तदनुसार, यह IS वक्र की प्रवणता को प्रभावित करेगा। यह IS वक्र अपेक्षाकृत अधिक चपटा हो

जाएगा [क्यों? आप एक कर फलन $T = t_0 + t_1Y$ ले सकते हैं और इसे समीकरण (3.4) में T के स्थान पर रखकर पता लगा सकते हैं]।

बोध प्रश्न 2

- 1) LM वक्र वास्तविक शेष की माँग और आपूर्ति के बीच समानता से प्राप्त होता है। पाठांश 3.3 देखें, विशेषकर चित्र 3.3।
- 2) जब LM वक्र ऊर्ध्वाधर होता है तो मुद्रा की माँग ब्याज दर के प्रति असंवेदनशील होती है। यह चलनिधि जाल की स्थिति का मामला है।
- 3) पाठांश 3.4.3 पढ़ें और उत्तर दें।

बोध प्रश्न 3

- 1) AD वक्र IS–LM मॉडल से अवकलित किया गया है। पाठांश 3.5.1 को पढ़ें और चित्र 3.8 को स्पष्ट करें।
- 2) चूँकि AD वक्र IS–LM मॉडल से लिया गया है, यह IS और LM वक्रों को प्रभावित करने वाले कारकों पर निर्भर करता है। आगे AD वक्र पर इन कारकों के प्रभाव की व्याख्या करें।



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY